INDIAN SCHOOL AL WADI AL KABIR

Class: IX	**Department: Hindi**	**Date-10.08.25**
Question Bank	**Topic: तुम कब जाओगे, अतिथि**	**Note: Pl. file in portfolio**

1. अतिथि कितने दिनों से लेखक के घर पर रह रहा है ?

अतिथि लेखक के घर चार दिनों से अधिक समय तक रहता है ।

2. कैलेंडर की तारीखें किस तरह फड़फड़ा रही थीं ?

कैलेंडर की तारीखें अपनी सीमा में नम्रता से फड़फड़ा रही थीं ।

3. पति - पत्नी ने अतिथि का स्वागत कैसे किया ?

पति ने स्नेह से भीगी मुस्कान के साथ गले मिल कर और पत्नी ने आदर से नमस्ते करके अतिथि का स्वागत किया ।

4.दोपहर के भोजन को कौन - सी गरिमा प्रदान की गई?

दोपहर के भोजन को शानदार लंच की गरिमा प्रदान की गई ।

5.तीसरे दिन सुबह अतिथि ने क्या कहा?

तीसरे दिन सुबह अतिथि ने कहा कि वह धोबी को अपने कपड़े धुलवाने के लिए देना चाहता है ।

6.सत्कार की ऊष्मा समाप्त होने पर क्या हुआ?

सत्कार की ऊष्मा समाप्त होने पर लंच, डिनर के स्थान पर खिचड़ी बनने लगी । भोजन में सादगी आ गई और अब भी अतिथि नहीं जाता तो लेखक को परिवार सहित उपवास तक रखना पड़ सकता था । ठहाकों के स्थान पर चुप्पी छा गई । सौहार्द अब धीरे-धीरे बोरियत में बदलने लगा था ।

7.लेखक अतिथि को कैसी विदाई देना चाहता था?

लेखक अतिथि को भावभीनी विदाई देना चाहता था । वह चाहता था कि जब अतिथि जाए तो पति - पत्नी उसे स्टेशन तक छोड़ने जाएँ । वे अतिथि को सम्मानजनक विदाई देना चाहते थे परन्तु उनकी यह मनोकामना पूरी नहीं हो पाई ।

8.पाठ में आए निम्नलिखित कथनों की व्याख्या कीजिए-

(i)अंदर ही अंदर कहीं मेरा बटुआ काँप गया।

जब लेखक ने अनचाहे अतिथि को आते देखा तो उसे महसूस हुआ कि खर्च बढ़ जाएगा ।इसी को बटुआ काँपना कहते हैं ।

(ii)अतिथि सदैव देवता नहीं होता, वह मानव और थोड़े अंशों में राक्षस भी हो सकता है ।

अतिथि जब आता है तो देवता जैसा प्रतीत होता है । अतिथि जब बहुत दिनों तक किसी के घर ठहर जाता है तो 'अतिथि देवो भव' का मूल्य शून्य हो जाता है । आने के एक दिन बाद

वह सामान्य हो जाता है अर्थात इतना बुरा भी नहीं लगता इसलिए इसे मानव रूप में कहा है और ज़्यादा दिन रह जाए तो राक्षस जैसा प्रतीत होता है अर्थात बुरा लगने लगता है ।

(iii)लोग दूसरे के होम की स्वीटनेस को काटने न दौड़ें ।

हर व्यक्ति अपने घर में सुख-शांति बनाए रखना चाहता है । अपने घर को स्वीट होम बनाए रखना चाहता है परन्तु अनचाहा अतिथि आकर उसकी इस मिठास को खत्म कर देता है । असुविधाएँ उत्पन्न हो जाती हैं । उसका आचरण दूसरों के जीवन को उथल-पुथल कर देता है । यह दूसरों के घर की सरसता कम करने का कारण बन जाता है ।

(iv)मेरी सहनशीलता की वह अंतिम सुबह होगी ।

अतिथि यदि एक दो दिन ठहरे तो उसका आदर सत्कार होता है परन्तु अधिक ठहरे तो वह देवत्व को खोकर राक्षस लगने लगता है । अतिथि चार दिन से लेखक के घर रह रहा था । कल पाँचवाँ दिन हो जाएगा । यदि कल भी अतिथि नहीं गया तो लेखक अपनी सहनशीलता खो देगा और अतिथि सत्कार भूलकर कुछ अप्रिय बोल बैठेगा ।

(v)एक देवता और एक मनुष्य अधिक देर साथ नहीं रहते ।

यदि अतिथि को देवता माना जाए तो वह मनुष्य के साथ ज़्यादा नहीं रह सकता । दोनों को सामान्य मनुष्य बनना पड़ेगा । देवता की पूजा की जाती है । देवता तो थोड़ी देर के लिए दर्शन देकर चले जाते हैं क्योंकि देवता यदि अधिक समय तक ठहरे तो उसका देवत्व ही समाप्त हो जाएगा ।

9.कौन - सा आघात अप्रत्याशित था और उसका लेखक पर क्या प्रभाव पड़ा?

लेखक सोच रहा था कि अब तो तीसरा दिन हो गया है, इसलिए अतिथि अवश्य ही चला जाएगा । लेकिन तीसरे दिन सुबह जब अतिथि ने लेखक से कहा कि वह अपने कपड़े धुलवाने के लिए धोबी को देना चाहता है तो लेखक को ज़ोर का झटका लगा । धोबी को कपड़े देने का अर्थ यह हुआ कि अतिथि लेखक के घर और कुछ दिन रहेगा । यह आघात अप्रत्याशित था । अब लेखक का व्यवहार अतिथि के प्रति बदलने लगा । वह चाह रहा था कि अतिथि शीघ्र से शीघ्र उसके घर से चला जाए ।

10.'संबंधों का संक्रमण के दौर से गुजरना'- इस पंक्ति से आप क्या समझते हैं? सविस्तार लिखिए ।

'संबंधों का संक्रमण के दौर से गुजरना' - इस पंक्ति का आशय है संबंधों में परिवर्तन आना । जो संबंध आत्मीयतापूर्ण थे अब घृणा और तिरस्कार में बदलने लगे । जब लेखक के घर अतिथि आया था तो उसके संबंध सौहार्द पूर्ण थे । उसने उसका स्वागत प्रसन्नता पूर्वक किया था । लेखक ने ढीली-ढाली आर्थिक स्थिति के बाद भी उसे शानदार डिनर खिलाया और सिनेमा दिखाया । लेकिन जब अतिथि चार दिन तक रुका रहा तो स्थिति में बदलाव आने लगा और

संबंध बदलने लगे । मधुर संबंध कटुता में परिवर्तित हो गए । सत्कार की ऊष्मा समाप्त हो गई । डिनर से खिचड़ी तक पहुँच कर अतिथि के जाने का चरम क्षण समीप आ गया था ।

11.जब अतिथि चार दिन तक नहीं गया तो लेखक के व्यवहार में क्या - क्या परिवर्तन आए?

जब अतिथि चार दिन तक नहीं गया तो स्थिति में बदलाव आने लगे और संबंध बदलने लगे । लेखक {शरत जोशी} ने अतिथि के साथ मुस्कुराकर बात करना छोड़ दिया, बातचीत के विषय समाप्त हो गए । सौहार्द पूर्ण व्यवहार अब बोरियत में बदल गया । मधुर संबंध कटुता में परिवर्तित हो गए । सत्कार की ऊष्मा समाप्त हो गई । डिनर से खिचड़ी तक पहुँचकर अतिथि के जाने का चरम क्षण समीप आ गया था । इसके बाद लेखक उपवास तक जाने की सोचने लगा । वह अतिथि को 'गेट आउट' तक कहने का विचार करने लगा ।